दिनांक: 19/04/2020

कोर्स:- बी.ए. (भाग- III)

विषय: - राजनीति विज्ञान

ऑनलाइन क्लासनोट्स संख्या: - ०1

(कोरोनोवायरस महामारी के कारण कक्षाओं के नुकसान के बदले में क्लास नोट्स)

(ऑनर्स के पाठ्यक्रम के लिए प्रासंगिक)

प्लेटो (PLATO): न्याय का सिद्धांत (THEORY OF JUSTICE)

प्लेटो: परिचय

- प्लेटो (427-347 ईसा पूर्व) एक प्रभावशाली दार्शनिक था। वह सुकरात का छात्र था।
- उन्होंने 'अकादमी' नामक पहले ज्ञात विश्वविद्यालय की स्थापना की। अकादमी उच्च शिक्षा में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र था।
- प्लेटो के विचारों का बाद के राजनीतिक सिद्धांत और पश्चिमी राजनीतिक विचार पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके प्रसिद्ध शिष्य अरस्तू थे।
- प्लेटो - सुकरात, हेराक्लिटस, परमेनाइड्स और पाइथागोरस के दर्शन से प्रभावित था।
- उनके कुछ महत्वपूर्ण कार्य (पुस्तकें) हैं – 'रिपब्लिक' (लगभग 386 ईसा पूर्व), 'स्टेट्समैन' (लगभग 360 ईसा पूर्व), और 'कानून' (Laws) (लगभग 347 ईसा पूर्व)।
- प्लेटो की पुस्तक 'रिपब्लिक' नैतिकता, राजनीति, दर्शन और तत्वमीमांसा के क्षेत्र में एक असाधारण कार्य है। ग्रीक में 'रिपब्लिक' का अर्थ न्याय है। प्लेटो का 'रिपब्लिक' न्याय पर एक

विद्वान कार्य है। पुस्तक संवाद के रूप में लिखी गई है। यह द्वंद्वात्मक पद्धति का उपयोग करता है।

- प्लेटो की कार्यप्रणाली में शामिल पद्धति है - घटात्मक, द्वंद्वात्मक, विश्लेषणात्मक, दूरसंचार, ऐतिहासिक और सादृश्य।

प्लेटो का न्याय का सिद्धांत

- न्याय की अवधारणा प्लेटो की पुस्तक 'रिपब्लिक' का केंद्रीय विषय है। पुस्तक व्यक्ति के साथ-साथ राज्य के लिए न्याय के उचित रूप के बारे में बात करती है।
- प्लेटो के कार्यों में न्याय की अवधारणा की प्रकृति नैतिक है। यह न्याय के रूप में आज के न्याय की अवधारणा से अलग है।
- प्लेटो न्याय की चयनात्मक परिभाषा से असहमत थे। उसके लिए, न्याय सभी के लिए अच्छा है।
- प्लेटो के अनुसार, व्यक्ति के जीवन में न्याय के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति की आत्मा के विभिन्न हिस्सों को उपयुक्त स्थान पर रखा जाए।
- प्लेटो के अनुसार, सामाजिक जीवन में न्याय की आवश्यकता है कि प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक वर्ग को उसके उचित स्थान पर रखा जाए।
- प्लेटो मानव जीव और सामाजिक जीव के बीच एक समानता बनाता है।
- प्लेटो के अनुसार मानव जीव में तीन तत्व होते हैं – विवेक (Reason), शौर्य (Spirit) और तृष्णा (Appetite)।
    - ❖ एक व्यक्ति के लिए न्याय का अर्थ है कि उसकी आत्मा का प्रत्येक भाग अन्य तत्वों के साथ हस्तक्षेप किए बिना अपने कार्यों को करता है।
    - ❖ प्लेटो का न्याय इसके अतिरिक्त मांग करता है कि दो संकाय - शौर्य और तृष्णा, विवेक संकाय के मार्गदर्शन में रहना चाहिए।
    - ❖ इसके अलावा, जब सभी तीन तत्व सहमत होते हैं कि उनमें से अकेले विवेक (Reason) का शासन होना चाहिए, तो व्यक्ति के भीतर न्याय होता है।
- मानव प्रकृति में इन तीन तत्वों के अनुरूप सामाजिक जीव में तीन वर्ग हैं:
    - ❖ दार्शनिक वर्ग या शासक वर्ग (विवेक का प्रतिनिधि) - प्लेटो बताता है कि जिन व्यक्तियों के पास तर्कसंगत संकाय है वे शासक वर्ग का गठन करेंगे, और ज्ञान ऐसी आत्मा का

गुण होगा। केवल इस आत्मा में आइडिया ऑफ गुड को समझने और शासन करने की शक्ति है।

- ❖ सहायक वर्ग (शौर्य का प्रतिनिधि) - जिन व्यक्तियों में शौर्य प्रमुख गुण है, वे सहायक या सैनिक हैं, और ऐसी आत्मा का गुण साहस है। शासक और सैनिक मिलकर अभिभावक वर्ग का गठन करेंगे।
- ❖ कारीगर या उत्पादक वर्ग (तृष्णा का प्रतिनिधि) - तृष्णा का प्रतिनिधि रखने वाले व्यक्ति कारीगर या उत्पादक वर्ग हैं। ऐसी आत्मा का गुण संयम है।

- अतः जिस तरह तृष्णा, शौर्य और विवेक का उचित समन्वय व्यक्ति में न्याय की सृष्टि करता है, उसी तरह राज्य में उत्पादक वर्ग सैनिक वर्ग और शासक वर्ग में उचित समन्वय न्याय की अवस्था की सृष्टि करता है।
- प्लेटो कहता है कि तीन सामाजिक वर्गों के बीच नौकरियों में किसी भी तरह का आदान-प्रदान राज्य को नुकसान पहुंचाएगा और यह सबसे बुरी बुराई होगी। इसके विपरीत, यदि वे अपना निर्धारित कार्य करते हैं, तो वह एक न्यायपूर्ण राज्य का निर्माण करेगा।
- प्लेटो के न्याय के सिद्धांत में उत्कृष्टता और पूर्णता लाने के लिए विशेषज्ञता को प्रोत्साहित किया गया था। यह किसी एक विशेष कार्य के लिए किसी भी प्रकार की श्रेष्ठता निर्दिष्ट करना नहीं था। यह अनिवार्य रूप से हर व्यक्ति में विशिष्टता को पहचानने और लाने के लिए था।
- इस प्रकार प्लेटो के न्याय का सिद्धांत कार्यात्मक विशेषज्ञता की मांग करता है जिसमें प्रत्येक सामाजिक वर्ग को अपने आवंटित कार्यों में खुद को माहिर करने की आवश्यकता होती है।
- न्याय, इसलिए प्लेटो के लिए, व्यक्ति और समाज दोनों में मौजूद है। लेकिन यह बड़े पैमाने पर समाज में अधिक दृश्य रूप में मौजूद है।
- न्याय इस प्रकार विशेषज्ञता है। यह केवल एक व्यक्ति के निर्दिष्ट कर्तव्यों को पूरा करने और किसी अन्य व्यक्ति के सौंपे गए कर्तव्यों से ध्यान हटाने से बचने का दायित्व है। प्लेटो के लिए सच्चा न्याय, इसलिए, गैर-हस्तक्षेप के सिद्धांत में शामिल है।
- प्लेटो द्वारा राज्य को एक संपूर्ण संपूर्ण माना गया है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति जो उसका तत्व है, वह स्वयं के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण के लिए कार्य करता है। प्रत्येक तत्व अपने उपयुक्त कार्य को पूरा करता है।
- प्लेटोनिक राज्य में न्याय, इसलिए, पूरे के साथ भागों के सामंजस्यपूर्ण संबंध की आवश्यकता होती है।

- न्याय केवल शक्ति नहीं है, बल्कि एक सामंजस्यपूर्ण शक्ति है। न्याय मज़बूत का अधिकार नहीं बल्कि संपूर्ण का प्रभावी सामंजस्य है।
- न्याय, प्लेटो के लिए, मानवीय गुण और बंधन का हिस्सा है, जो समाज में मनुष्य को एक साथ जोड़ता है।

<u>प्लेटो के न्याय के सिद्धांत का आलोचनात्मक मूल्यांकन</u>

- प्लेटो का न्याय के सिद्धांत की प्रकृति आदर्शवादी है।
- यह कर्तव्यों पर बहुत जोर देता है और अधिकारों का कोई संबंध नहीं है।
- यह अभिभावक वर्ग को सत्ता का एकाधिकार देता है और यह लोकतांत्रिक आदर्शों के खिलाफ है।
- प्लेटो ने अभिभावक वर्ग के जीवन को इतना सीमित कर दिया है कि वे जीवन या खुशी का आनंद नहीं ले सकते हैं।
- विभिन्न वर्गों में समाज का विभाजन वर्ग चेतना को जन्म दे सकता है और वर्ग युद्ध का कारण बन सकता है।
- यह समाज को तीन वर्गों में विभाजित करता है, जो अब असंभव है।
- एकरूपता के माध्यम से एकता प्राप्त करने के लिए प्लेटो का सुझाव स्थिर नहीं है।
- यह कठोर है क्योंकि यह जीवन भर कार्यात्मक विशेषज्ञता और "एक आदमी एक काम" पर आधारित है।
- यह गैर-हस्तक्षेप के लिए सुझाव देता है लेकिन एक शासक के लिए नागरिकों के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना असंभव है।

Note (ध्यान दें): -

- प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 150-200 शब्दों में लिखें।
- अपने हाथ से लिखे या टाइप किए गए उत्तर ईमेल पर भेजें या इसे गूगल कक्षाएं (Google Class) पर अपलोड करें।

Questions (प्रश्न): -

1. प्लेटो का न्याय का सिद्धांत क्या है? चर्चा करें।
2. प्लेटो के अनुसार, क्या व्यक्तियों और समाज के लिए न्याय की धारणाओं में कोई अंतर है? टिप्पणी करें।
3. आज की दुनिया में प्लेटो के न्याय के सिद्धांत की सीमाएँ क्या हैं?